International Journal of Multidisciplinary Research in Social Science
ISSN: 2455-7943

o'khèkj 'kqDy d dk0; e lkekftd pruk

M,å vkHkk 'kqDyk

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, एस० डी० एस० एन० डिग्री कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

अवधी सम्राट वंशीधर शुक्ल करुणा से ओत-प्रोत मानवतावादी कवि हैं | उन्होंने सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला है | उन्होंने समाज के निर्बल वर्ग का अत्यंत मर्मस्पर्शी वर्णन किया है | उन्होंने व्यथित कृषक को अपने काव्य का नायक बनाया है | यदि यह कहें तो अनुचित ना होगा कि शुक्ल जी के काव्य का अधिकांश भाग कृषक पीड़ा से आच्छादित है | शुक्ल जी की "किसान बन्दना", "जबाना हमका नोचे खाय", "किसान की दशा" आदि रचनाएं कृषक के जीवन के संघर्ष का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं | "किसान बन्दना" में शुक्ल जी ने क्षुधित कृषक के जीवन का जो मर्मस्पर्शी चित्र प्रस्तुत किया है उसे पढ़कर पाठक भावुक हुए बिना नहीं रह सकता है | इसी प्रकार शुक्ल जी ने "जबाना हमका नोचे खाय" शीर्षक रचना में समाज के उस संपन्न एवं शक्तिशाली वर्ग का वर्णन किया है जो किसान का शोषण करता है, उसकी सरलता का अनुचित प्रयोग करता है | "किसान की दशा" शीर्षक रचना में भी शुक्ल जी ने किसान के जीवन का संघर्ष प्रस्तुत किया है, इसमें किसान एवं उसके परिवार के सदस्यों का त्याग भली-भांति उजागर हुआ है| |

शुक्ल जी ने सामाजिक भ्रष्टाचार पर भी लेखनी चलाई है | वह सामाजिक अव्यवस्था से अत्यंत क्षुब्ध थे |शुक्ल जी में स्वस्थ वातावरण के सृजन की लगन कूट-कूट कर समायी हुई थी | यही कारण है कि उन्होने समाज में परिवर्तन लाने का पूरा प्रयास किया | "घनाक्षरी", "हुँवा कस कस होई निरवाह", दहेज व्यापार", "मधुसाला", "राजा की कोठी" आदि रचनाएं इसका सटीक उदाहरण हैं | वंशीधर शुक्ल जी

International Journal of Multidisciplinary Research in Social Science ISSN : 2455-7943 IJMRSS || विद्वान्सर्वत्र पूज्यते ||

सच्चे अर्थों में समाज सेवी थे, उन्होंने सामाजिक रुढ़ियों एवं कुरीतियों पर भी करारा प्रहार किया है | "दहेज की भ्यांट" एवं "दहेज व्यापार" आदि रचनाओं में उनकी इस भावना के दर्शन होते हैं |

शुक्ल जी निर्भय व्यक्तित्व के स्वामी थे | उन्होंने सामाजिक अव्यवस्था पर जो कुठाराघात किया है, वह उनके साहस का परिचायक है | राजा की कोठी, हाय कन्ट्रउल, जमींदारों से एवं बदमाश बन्दना आदि रचनाओं में शुक्ल जी ने आधुनिक समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है | इतना ही नहीं उन्होंने दुष्कर्मों से होने वाले पतन की ओर भी ध्यान आकर्षित किया है और मनुष्य को सचेत भी किया है कि वो सन्मार्ग पर चले | शुक्ल जी ने निर्धनता, बेरोजगारी और निम्न वर्ग की यथार्थ आर्थिक स्थिति का भी चित्रण किया है | अम्मा रोटी एवं होरी आदि इसके सटीक उदहारण हैं | वंशीधर शुक्ल ने संदेशात्मक रचनाओं का भी सृजन किया है | उन्होंने शोषित वर्ग को अपने अधिकारों के प्रति सचेत होने और समस्त समाज को परिश्रम करने का सन्देश दिया है | शुक्ल जी आशावादी चिन्तन में विश्वास करते थे, उन्होंने मनुष्य को सदैव आशावादी होने का सन्देश दिया है | शुक्ल जी के काव्य में वर्णित सामाजिक जीवन को हम निम्नांकित वर्गों में वर्गीकृत करके स्पष्ट कर सकते हैं –

1. किसान एवं मजदूर वर्ग के प्रति संवेदना

किसान एवं श्रमिक वर्ग के प्रति शुक्ल जी की विशेष संवेदना रही है, जो उनके काव्य में सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है | वास्तविकता यह है कि शुक्ल जी के काव्य का अधिकांश भाग कृषक संवेदना से ओत-प्रोत है | किसान बन्दना, सँगु छाँडौं तालुकदारन का, जबाना हमका नोचे खाय, एवं किसान की दशा आदि रचनाओं में शुक्ल जी की किसानों के प्रति विशेष संवेदना दिखाई देती है | इसी प्रकार वह श्रमिक व मजदूर वर्ग के प्रति भी संवेदनशील रहे हैं | ग्रामीण मजदूर, मजदूर, एवं कहाँ तक सहन करे मजदूर आदि रचनाएँ इसका सटीक उदाहरण हैं | किसान बन्दना नामक शीर्षक रचना में शुक्ल जी ने किसान की जिस दीन-हीन दशा का वर्णन किया है, उसे पढ़कर किसी भी पाठक का हृदय द्रवित हो उठेगा |

इसमें शुक्ल जी ने किसान की अत्यंत जर्जर देहावस्था का वर्णन किया है | यथा उसकी हड्डी सूखी है, गला टेढ़ा है, आँखें बैठी हुई हैं, उसकी कमर झुकी हुई है, हाथ-पैर अत्यंत क्षीण हैं, उसने अपने शरीर को सिकोड़ कर रखा है | इतना ही नहीं वह फटे वस्त्र पहने है | किसान बन्दना की इन पंक्तियों में ऐसी ही स्थिति वर्णित है –

पीठी माँ चपटा पेटु सूखि, आँतै सिमिटी चलि रही साँस,

दुख दोस लदे भय रोग लदे, करुई बोली, उरमाँ मिठास |

अनगिन तीरन देही चीरी, बीसन जिन्दा नासूर चलै,

तरवन माँ काँटन के गुखुरु छिन-छिन दुनिया निगलै उगलै |

सबरी भव बाधा बाँध तोरि, जीवन नैया कै रहा पार,

सबु ढोय रहा धरती बादरु, ऐसे किसान का नमस्कार |

2. सामाजिक असमानता एवं भ्रष्टाचार का वर्णन

शुक्ल जी ने सामाजिक असमानता एवं भ्रष्टाचार का वर्णन अपने काव्य में विस्तार से किया है | सामाजिक भ्रष्टाचार ने उनके हृदय को झकझोर कर रख दिया, जिसके फलस्वरूप लेखनी के माध्यम से शोषकों के प्रति उनका आक्रोश, शोषितों के प्रति उनकी संवेदना उनके काव्य में प्रकट हुई | वास्तव में सामाजिक असमानता से शुक्ल जी अत्यंत दुःखी थे | वह एक स्वस्थ समाज की परिकल्पना करते थे और उसके लिए उन्होंने पूरा-पूरा प्रयास भी किया |

घनाक्षरी शीर्षक रचना में शुक्ल जी ने सामाजिक असमानता का वर्णन करते हुए लिखा है कि समाज के अत्याचारों से सिर्फ मनुष्य ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी, प्रकृति एवं जानवर आदि भी अत्यंत दुःखी हैं | इसे निम्न पंक्तियों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है –

आज जुल्म देखि देखि शासक अनारिन का, भुकुरै मनुष्य मेहरारु लगी खौंखियाय |

रोवै लागी घास बिर्छ थर-थर कांपै लाग, धरती फेनानि औ अकास लाग धुँधुवाय |

डरे जीव जन्तु, ताल तलिया तड़कि गई, नदी पेट्ट सूख औ पहाड़ी गई पथराय |

देखौ भगवान चढ़ि पुन्य के विमान तनि, देसु हहनाय दुनियाँ माँ जान परिजाय |

3. सामाजिक रुढ़ियों, परम्पराओं एवं कुरीतियों का वर्णन

वंशीधर शुक्ल जी ने सामाजिक रुढ़ियों, परम्पराओं एवं प्रथाओं का विरोध किया है | दहेज की भ्याँट, दहेज व्यापार, कन्या की इच्छा एवं अनमेल विवाह आदि रचनाओं में उन्होंने सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात किया है | शुक्ल जी ने अपनी रचना दहेज की भ्याँट में दहेज रुपी राक्षस के भयावह रूप का वर्णन किया है | दहेज की भ्याँट कविता कि निम्नांकित पंक्तियों में कन्या की दुर्दशा द्रष्टव्य है –

ब्याह के बादि आठ दिन बीति, मालु कपड़ा बिटिया का छीनि |

बंद डोली माँ लइ बइठारि, अँधेरे जंगल माँ तजि दीनि |

लरिकिनी नन्ही हइ नादान, राह पूंछति रोवति घर आय |

फटी धोती गाढ़ा की पहिरि, गरे अम्मा के गइ लपटाय |

पीठि पर करछुलि दिहिनि दगाय, देखि सबु टोला भरि चिल्लाय |

हाय ! हमरे हियरे की कली, जियति माँ भूखी बिलखई लली |

4. सामाजिक अव्यवस्था पर व्यंग्य

वंशीधर शुक्ल जी ने सामाजिक अव्यवस्था पर आक्रोश व्यक्त किया है | यही कारण है कि कहीं-कहीं उन्होंने व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है | शुक्ल जी ने राजा की कोठी, अदालति, हाय कन्ट्रउल, पहिल चुनाव, सूरपद पैरोडी न०-२, अवसरवादी नेता तथा स्वाहा आदि रचनाओं में सामाजिक अव्यवस्था के चित्र प्रस्तुत किये हैं | राजा की कोठी का वर्णन करते हुए शुक्ल जी कहते हैं कि राजा ने श्रमिकों का शोषण करके अपनी कोठी की साज-सज्जा की है | राजा की कोठी शीर्षक रचना की पंक्तियों से भी यह बात स्पष्ट होती है –

ईंट किसानन के हाड़न की, लगा खून का गारा |

पत्थर अस जियरा मँजूर का, चमक आँखि का तारा

लगी देस भगतन की चरबी, चिकनाई जुलमन की

घंटा ठनकइ अन्यायन का, कथा होइ पापन की |

जहाँ बसइ ऊ जम का भइया, खाय खून की रोटी,

हुँवइ बनी बूचड़खाना असि, यह राजा की कोठी ||

शुक्ल जी स्वाहा रचना में सामाजिक अव्यवस्था पर व्यंग्य करते हुये कहते हैं कि आज भारतीय शिष्टाचार स्वाहा हो गया है, राष्ट्र का उत्थान स्वाहा हो गया है, सत्पुरुषों का सम्मान स्वाहा हो गया है | इसे स्वाहा रचना की निम्न पंक्तियों से स्पष्ट किया जा सकता है –

पूज्य गाँधी की चिता में सत् अहिंसा त्याग स्वाहा,

लौह पुरुष पटेल की पार्टी प्रपंची राग स्वाहा |

असहयोग प्रलाप स्वाहा, भूख की हड़ताल स्वाहा,

मूर्ख सत्याग्रही रोते व्यर्थ सब धनमाल स्वाहा |

धूर्त स्वार्थी बने शासक त्याग पद मर्याद स्वाहा,

राज्य कुनबा परसती का जेल यात्री वाद स्वाहा |

शासकों की मूर्खता पर देश का गौरव मान स्वाहा,

कायरों की लचरता से वीर रण आह्वान स्वाहा |

5. निर्धनता एवं बेरोजगारी का वर्णन

वंशीधर शुक्ल जी ने अपनी रचना अम्मा रोटी तथा बेगारि में निर्धनता एवं बेरोजगारी का अत्यंत हृदय विदारक वर्णन किया है | अम्मा रोटी तथा बेगारि में शुक्ल जी ने भावुकता एवं यथार्थ का ऐसा सम्मिश्रण किया है कि कोई भी पाठक द्रवित हुए बिना नहीं रह सकता | अम्मा रोटी की निम्न पंक्तियाँ किसी भी पाठक को द्रवित करने में पूर्णतया समर्थ हैं –

चुपि रहौ पूतु चुप-चुप चुप-चुप, भ्वरहें बप्पा म्यालइ जाई,

भइया का कनियाँ माँ बिठाइ, तीरथ मैंहा बुडकी ल्याई |

फिरी चकई औरु हिड़वाला पर, हमहूँ झुलिवा, भइयउ झूली,

भइया बादर-बादर घुमिहइँ, झुलुवा जब उप्पर का ऊली |

हम नान्हि मुँहुटिया भइया की, लइया गट्टा ते भरि देबा,

भूँखा बच्चा चिंघारी उठा, 'अम्मा रोटी' 'अम्मा रोटी' ||

इसी प्रकार बेगारि रचना में भी शुक्ल जी ने निर्धनता एवं बेरोजगारी का अत्यंत मार्मिक वर्णन किया है|

बछरा, मुनुवा आँखी खोलउ, देखउ तुमरी बदि का लायेन,

चकिया, घुनघुना, गोलिनी, घोड़वा मट्टी का हाथी लायेन |

कस रँगे-चुँगे कस नीकि-नीकि, हाँथन ते उठउ टटोहउ तउ,

दुइ पहरा केरि मँजूरी दइ लायेन बजार ते धाखउ तउ |

6. निम्न वर्ग की आर्थिक स्थिति का वर्णन

वंशीधर शुक्ल ने होरी, गरीबी एवं दीपावली शीर्षक रचनाओं में निम्न वर्ग की आर्थिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है | धनाभाव के कारण एक निम्न वर्ग के व्यक्ति की सोच इस त्यौहारों के आगमन पर कैसी है, यह होरी रचना की निम्न पंक्तियों में द्रष्टव्य है –

होरी आई होरी आई दुनियाँ बक्कै होरी आई,

कपड़ा नए बनाई कैसे, घर माँ रही ना एक्कौ पाई |

इसी प्रकार गरीबी रचना का नायक भी अत्यंत दुखी है, वह कहता है कि खेती करने से कोई लाभ नहीं है | गरीबी की निम्न पंक्तियाँ किसान के दुःख को व्यक्त करने में समर्थ हैं –

दिन भरि हपर हपर के दौरी तबहूँ भरै न पेट,

धोती फटी न कुर्ता फतुहीं, बाँधि न पाई फेंट;

लरिका लरिकी रोटी माँगै, कपड़ा माँगै मेहरी,

छप्पर चुवै न ठौर तिलौ भरि, गिरी परी सब बखरी;

करी मंजूरी दिन भरि भरमी, राति माँ नींद ना आवै,

सरग नरक माँ नहीं ठेकाना, मौतौ खाय ना आवै |

दीपावली शीर्षक रचना भी दीपावली जैसे पर्व जो कि समस्त वातावरण को अपने प्रकाश से आलोकित कर देता है, निम्न वर्ग की मानसिक स्थिति का वर्णन करती है | दीपावली की निम्न पंक्तियों में अत्यंत विरोधाभास के दर्शन होते हैं, कहीं तो हर्ष के साथ त्यौहार मनाया जा रहा है और कहीं दुःख के बादल छाए हुए हैं –

क्वै नये-नये कपड़ा साजै, कोइ रंग बिरंगा सजै चीर,

कोई के तीर नहीं चिथरा, कोई दुबरा नंगा सरीर,

कहुँ छर्र उड़ै रुपया पैसन, कहुँ नाचि रही कंगाली,

आई आई दिवाली |

7. आधुनिक समाज का यथार्थ चित्रण

कौनु कहि रहा देसु कंगाल में आधुनिक समाज का यथार्थ चित्रण शुक्ल जी ने किया है | शुक्ल जी का कहना है कि हमारे देश में एक तरफ लोग भूख से पीड़ित हैं और कहीं पर कुत्ते मक्खन खा रहे हैं | यही नहीं लाखों करोड़ो रूपये की अफीम, शराब, तम्बाकू एवं भाँग का विक्रय होता है | यह विरोधाभास ही तो है कि किसी को रोटी का ठिकाना नहीं और कोई अंडा, शराब आदि का सेवन कर रहा है, जो निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है –

जहाँ लाखन की उड़ै अफीम, करोड़न की उड़ि रही शराब |

तमाखू अरब खरब की उड़ड़, भाँग का रगड़ा बिना हिसाब |

पी रहे बैंचि बाप का माल ||

चाय, बिसकुट, अंडा अउ टोस, खाय कोकीन होय रस भोग |

उड़ै गांजा की बढ़िया चिलम, चर्स पियतै सब भागैं रोग |

बिकै घरबार हटै जन्जाल ||

8. धर्माडम्बरों तथा सामाजिक विकृतियों के प्रति शुक्ल जी का आक्रोश

शुक्ल जी ने अपनी रचना किरतनहा में धर्म का आडम्बर करने वाले लोगों के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है | शुक्ल जी कहते हैं कि आज सत्य बोलने वाले लोग कष्ट पा रहे हैं और असत्य का सहारा लेने वाले

सुखी हैं | इसके अतिरिक्त स्वार्थी प्रवृत्ति भी हमारे समाज पर अपना साम्राज्य स्थापित किए है | शुक्ल जी ने धर्म का आडम्बर करने वालों पर अपनी रचना किरतनहा की निम्न पंक्तियों में क्रोध व्यक्त किया है –

कुछ माथे तिरपुंड लगाइनि कुछ माला सटकाइनि,

बाँधि लँगोटी बार बढ़ाइनि रचि-रचि भेषु बनाइनि |

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वंशीधर शुक्ल जी ने अपने काव्य में चित्रित सामाजिक जीवन के अन्तर्गत समाज में स्थित ज्वलन्त एवं महत्वपूर्ण समस्याओं को उभारने का प्रयास किया है | इतना ही नहीं उन्होंने उन समस्याओं को समाप्त करने के उपाय भी बताये हैं | यदि हम सभी समाज को शिक्षित एवं प्रगतिशील बनाने का सामूहिक प्रयास करें तो समाज में प्रचिलित कुरीतियों, कुप्रथाओं एवं परम्पराओं को समाप्त किया जा सकता है और स्वस्थ समाज की स्थापना का जो स्वप्न वंशीधर शुक्ल जी ने देखा था, उसे साकार किया जा सकता है |

ISSN : 2455-7943
IJMRSS
॥ विद्वान्सर्वत्र पूज्यते ॥
International Journal of Multidisciplinary Research in Social Science

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

१ कबीर ग्रन्थावली, राम किशोर शर्मा

२ क्रन्तिगीत, श्री राम शर्मा आचार्य

३ जनकवि वंशीधर शुक्ल (एक आंकलन), डॉ०श्याम सुन्दर मिश्र 'मधुप'

४ निराला जी की कविताएँ और काव्य भाषा, रेखा खरे

५ वंशीधर शुक्ल रचनावली, डॉ०श्याम सुन्दर मिश्र 'मधुप'

६ सूक्ति सागर, रमाशंकर गुप्त

*****

International Journal of Multidisciplinary Research in Social Science :: ISSN : 2455-7943 IJMRSS ॥ विद्वान्सर्वत्र पूज्यते ॥